पाठ 3.2 : अकेली

मन्नू भण्डारी

BQSY2V

*हिंदी की चर्चित कहानीकार **मन्नू भंडारी** का जन्म सन् 1931 ई. में भानपुरा, मध्यप्रदेश में हुआ। चर्चित स्त्री रचनाकार के रूप में इन्होंने बहुत सी कहानियाँ लिखी हैं, जो आठ संग्रहों में संकलित हैं। उनकी एक कहानी **'यही सच है'** पर हिंदी में फिल्म भी बनी, जो बहुत लोकप्रिय हुई थी। उन्होंने कई उपन्यास भी लिखे हैं जिनमें **'महाभोज'** एवं **'आपका बंटी'** विशेष उल्लेखनीय है।*

सोमा बुआ बुढ़िया हैं।

सोमा बुआ परित्यक्ता हैं।

सोमा बुआ अकेली हैं।

सोमा बुआ का जवान बेटा क्या जाता रहा, उनकी अपनी जवानी चली गई। पति को पुत्र–वियोग का ऐसा सदमा लगा कि वे पत्नी, घर–बार तजकर तीरथवासी हुए और परिवार में कोई ऐसा सदस्य था नहीं जो उनके एकाकीपन को दूर करता। पिछले बीस वर्षों से उनके जीवन की इस एकरसता में किसी प्रकार का कोई व्यवधान उपस्थित नहीं हुआ, कोई परिवर्तन नहीं आया। यों हर साल एक महीने के लिए उनके पति उनके पास आकर रहते थे। पर कभी उन्होंने पति की प्रतीक्षा नहीं की, उनकी राह में आँखें नहीं बिछाईं। जब तक पति रहते उनका मन और भी मुरझाया हुआ रहता क्योंकि पति के स्नेहहीन व्यवहार का अंकुश उनके रोजमर्रा के जीवन की अबाध गति से बहती स्वच्छंद धारा को कुंठित कर देता। उस समय उनका घूमना–फिरना, मिलना–जुलना बंद हो जाता है और संन्यासीजी महाराज से तो यह भी नहीं होता कि दो मीठे बोल–बोलकर सोमा बुआ को एक ऐसा संबल ही पकड़ा दें, जिसका आसरा लेकर वह उनके वियोग के ग्यारह महीने काट दें। इस स्थिति में बुआ को अपनी ज़िंदगी पास–पड़ोसवालों के भरोसे ही काटनी पड़ती थी। किसी के घर मुंडन हो, छठी हो, जनेऊ हो, शादी हो या ग़मी, बुआ पहुँच जातीं और फिर छाती फाड़कर काम करतीं, मानो वे दूसरे के घर नहीं अपने ही घर में काम कर रही हों।

आजकल सोमा बुआ के पति आए हुए हैं और अभी–अभी कुछ कहा–सुनी हो चुकी है। बुआ आँगन में बैठी धूप खा रही हैं, पास रखी कटोरी से तेल लेकर हाथों में मल रही हैं, और बड़बड़ा रही हैं। इस एक महीने में अन्य अवयवों के शिथिल हो जाने के कारण उनकी जीभ ही सबसे अधिक सजीव और सक्रिय हो उठती है। तभी हाथ में एक फटी साड़ी और पापड़ लेकर ऊपर से राधा भाभी उतरीं।

''क्या हो गया बुआ, क्यों बड़बड़ा रही हो, फिर संन्यासीजी महाराज ने कुछ कह दिया क्या?''

''अरे, मैं कहीं चली जाऊँ सो भी इन्हें नहीं सुहाता। कल चौकवाले किशोरीलाल के बेटे का मुंडन था, सारी बिरादरी का न्यौता था। मैं तो जानती थी कि ये पैसे का ही गुरूर है, जो मुंडन पर भी सारी बिरादरी को न्यौता है, पर काम उन नई–नवेली बहुओं से सँभलेगा नहीं, सो जल्दी ही चली गई। हुआ भी वही. . .'' और सरककर बुआ ने राधा के हाथ से पापड़ लेकर सुखाने शुरू कर दिए। ''एक काम गत से नहीं हो रहा था। अब घर में कोई बड़ा–बूढ़ा हो तो बतावे या कभी किया हो तो जानें। गीतवाली औरतें मुंडन पर बन्ना–बन्नी गा रही थीं, मेरा तो हँसते–हँसते पेट फूल गया।'' और उसकी याद से ही कुछ देर पहले का दुःख और आक्रोश धुल गया। अपने सहज स्वाभाविक रूप में वे कहने लगीं– ''भट्टी पर देखा तो अजब तमाशा . . . समोसे कच्चे ही उतार दिए और इतने बना दिए कि दो बार खिला दो और गुलाबजामुन इतने कम कि एक पंगत में भी पूरे न पड़ें। उसी समय खोया मँगवाकर नए गुलाबजामुन बनाए। दोनों बहुएँ और किशोरीलाल तो बिचारे इतना जस मान रहे थे कि क्या बताऊँ? कहने लगे– ''अम्मा! तुम न होती तो आज भद्द उड़ जाती। अम्मा! तुमने लाज रख ली!'' मैंने तो कह दिया कि ''अरे, अपने ही काम नहीं आवेंगे तो कोई बाहर से तो आवेगा नहीं। ये तो आजकल इनका रोटी–पानी का काम रहता है, नहीं तो मैं तो सवेरे से ही चली आती!''

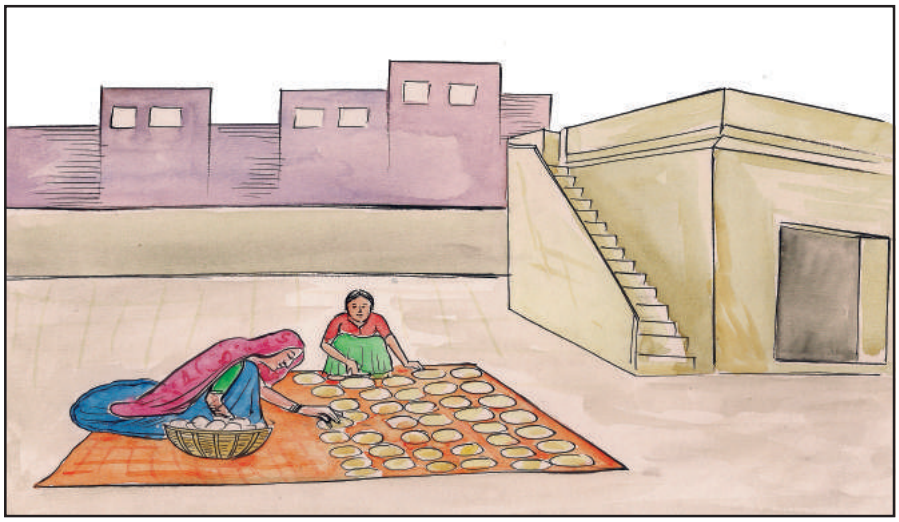

''तो संन्यासी महाराज क्यों बिगड़ पड़े? उन्हें तुम्हारा आना–जाना अच्छा नहीं लगता बुआ?''

''यों तो मैं कहीं आऊँ–जाऊँ सो ही इन्हें नहीं सुहाता और फिर कल किशोरी के यहाँ से बुलावा नहीं आया। अरे, मैं तो कहूँ कि घरवालों को कैसा बुलावा? वे लोग तो मुझे अपनी माँ से कम नहीं समझते, नहीं तो कौन भला यों भट्ठी और भंडार–घर सौंप दे? पर इन्हें अब कौन समझावे। कहने लगे, तू ज़बरदस्ती दूसरों के घर में टाँग अड़ाती फिरती है।'' और एकाएक उन्हें उस क्रोध–भरी वाणी और कटुवचनों का स्मरण हो आया जिनकी बौछार कुछ देर पहले ही उन पर होकर गुजर चुकी थी। याद आते ही फिर उनके आँसू बह चले।

''अरे, रोती क्या हो बुआ! कहना–सुनना तो चलता रहता है। संन्यासीजी महाराज एक महीने को तो आकर रहते हैं, सुन लिया करो, और क्या?''

''सुनने को तो सुनती ही हूँ, पर मन तो दुखता ही है कि एक महीने को आते हैं तो भी कभी मीठे बोल नहीं बोलते। मेरा आना–जाना इन्हें सुहाता नहीं, सो तू ही बता राधा, ये तो साल में ग्यारह महीने हरिद्वार रहते

हैं। इन्हें तो नाते–रिश्तेवालों से कुछ लेना–देना नहीं, पर मुझे तो सबसे निभाना पड़ता है। मैं भी सबसे तोड़–ताड़ कर बैठ जाऊँ तो कैसे चले? मैं तो इनसे कहती हूँ कि जब पल्ला पकड़ा है तो अंत समय में भी साथ ही रखो, सो तो इनसे होता नहीं। सारा धरम–करम ये ही लूटेंगे, सारा जस ये ही बटोरेंगे और मैं अकेली पड़ी–पड़ी यहाँ इनके नाम को रोया करूँ। उस पर से कहीं आऊँ–जाऊँ, वह भी इनसे बर्दाश्त नहीं होता!'' और बुआ फूट–फूटकर रो पड़ीं। राधा ने आश्वासन देते हुए कहा–''रोओ नहीं बुआ, अरे वे तो इसलिए नाराज हुए कि बिना बुलाए तुम चली गईं।''

''बेचारे इतने हंगामे में बुलाना भूल गए तो मैं भी मान करके बैठ जाती? फिर घरवालों को कैसा बुलाना? मैं तो अपनेपन की बात जानती हूँ। कोई प्रेम नहीं रखे तो दस बुलावे पर नहीं जाऊँ और प्रेम रखे तो बिना बुलाए भी सिर के बल जाऊँ। मेरा अपना हरखू होता और उसके घर काम होता तो क्या मैं बुलावे के भरोसे बैठी रहती? मेरे लिए जैसा हरखू वैसा किशोरीलाल। आज हरखू नहीं है इसी से दूसरों को देखकर मन भरमाती रहती हूँ।'' और वे हिचकियाँ लेने लगीं।

पापड़ों को फैलाकर स्वर को भरसक कोमल बनाकर राधा ने कहा– ''तुम भी बुआ बात को कहाँ–से–कहाँ ले गईं? अब चुप भी होओ! अच्छा देखो, तुम्हारे लिए एक पापड़ भूनकर लाती हूँ, खाकर बताना कैसा है?'' और वह पापड़ लेकर ऊपर चढ़ गई।

कोई सप्ताह–भर बाद बुआ बड़े प्रसन्न मन से आईं और संन्यासीजी से बोलीं– ''सुनते हो, देवरजी के ससुरालवालों की किसी लड़की का संबंध भागीरथी के यहाँ हुआ है। वे सब लोग यहीं आकर ब्याह कर रहे हैं। देवरजी के बाद तो उन लोगों से कोई संबंध ही नहीं रहा, फिर भी हैं तो समधी ही। वे तो तुमको भी बुलाए बिना नहीं मानेंगे। समधी को आखिर कैसे छोड़ सकते हैं?'' और बुआ पुलकित होकर हँस पड़ीं। संन्यासीजी की मौन उपेक्षा से उनके मन को ठेस पहुँची, फिर भी वे प्रसन्न थीं। इधर–उधर जाकर वे इस विवाह की प्रगति की खबरें लातीं! आखिर एक दिन वे यह भी सुन आईं कि उनके समधी यहाँ आ गए हैं और जोर–शोर से तैयारियाँ हो रही हैं। सारी बिरादरी को दावत दी जाएगी–खूब रौनक होनेवाली है। दोनों ही पैसेवाले ठहरे।

''क्या जानें! हमारे घर तो बुलावा भी आएगा या नहीं, देवरजी को मरे पच्चीस बरस हो गए, उसके बाद से तो कोई संबंध ही नहीं रखा। रखे भी कौन, यह काम तो मर्दों का होता है, मैं तो मरदवाली होकर भी बेमरद की हूँ।'' और एक ठंडी साँस उनके दिल से निकल गई।

''अरे वाह बुआ! तुम्हारा नाम कैसे नहीं होगा। तुम तो समधिन ठहरीं। देवर चाहे न रहे पर कोई रिश्ता थोड़े ही टूट जाता है!'' दाल पीसती हुई घर की बड़ी बहू बोली।

''है बुआ, नाम है। मैं तो सारी लिस्ट देखकर आई हूँ।'' विधवा ननद बोली। बैठे–ही–बैठे दो कदम आगे सरककर बुआ ने बड़े उत्साह से पूछा–''तू अपनी आँखों से देखकर आई है नाम? नाम तो होना ही चाहिए। पर मैंने सोचा कि क्या जाने आजकल के फैशन में पुराने संबंधियों को बुलाना हो, न हो।'' और बुआ बिना दो पल भी रुके वहाँ से चल पड़ीं। अपने घर जाकर सीधे राधा भाभी के कमरे में चढ़ीं–''क्यों री राधा! तू तो जानती है

कि नई फैशन में लड़की की शादी में क्या दिया जावे है? समधियों का मामला ठहरा, सो भी पैसेवाले। खाली हाथ जाऊँगी तो अच्छा नहीं लगेगा। मैं तो पुराने ज़माने की ठहरी, तू ही बता दे क्या दूँ? अब कुछ बनाने का समय तो रहा नहीं, दो दिन बाकी हैं, सो कुछ बना–बनाया ही खरीद लाना।''

''क्या देना चाहती हो अम्मा? ज़ेवर, कपड़ा, शृंगारदान या कोई और चाँदी की चीज़?''

''मैं तो कुछ भी नहीं समझूँ री। जो कुछ पास है तुझे लाकर दे देती हूँ, जो तू ठीक समझे ले आना। बस, भद्द नहीं उड़नी चाहिए! अच्छा देखूँ पहले कि रुपये कितने हैं?'' और वे डगमगाते कदमों से नीचे आईं। दो–तीन कपड़ों की गठरियाँ हटाकर एक छोटा–सा बक्सा निकाला। उसका ताला खोला। इधर–उधर करके एक छोटी–सी डिबिया निकाली। बड़े जतन से उसे खोला–उसमें सात रुपए की कुछ रेजगारी पड़ी थी और एक अँगूठी। बुआ का अनुमान था कि रुपए कुछ ज्यादा होंगे, पर जब सात ही रुपए निकले तो सोच में पड़ गईं। रईस समधियों के घर में इतने से रुपयों से बिंदी भी नहीं लगेगी। उनकी नज़र अँगूठी पर गई। यह उनके मृतपुत्र की एक मात्र निशानी उनके पास रह गई थी। बड़े–बड़े आर्थिक संकटों के समय भी वे उस अँगूठी का मोह नहीं छोड़ सकी थीं। आज भी एक बार उसे उठाते समय उनका दिल धड़क गया, फिर भी उन्होंने पाँच रुपए और वह अँगूठी आँचल से बाँध ली। बक्से को बंद किया और फिर ऊपर को चलीं, पर इस बार उनके मन का उत्साह कुछ ठंडा पड़ गया था और पैरों की गति शिथिल। राधा के पास जाकर बोलीं– ''रुपए तो नहीं निकले बहू। आएँ भी कहाँ से, मेरे कौन कमानेवाला बैठा है? उस कोठरी का किराया आता है, उसमें दो समय की रोटी निकल जाती है जैसे–तैसे!'' और वे रो पड़ीं। राधा ने कहा–''क्या करूँ बुआ, आजकल मेरा भी हाथ तंग है, नहीं तो मैं ही दे देती। अरे, पर तुम देने के चक्कर में पड़ती ही क्यों हो? आजकल तो लेन–देन का रिवाज़ ही उठ गया है।''

''नहीं रे राधा, समधियों का मामला ठहरा! पच्चीस बरस हो गए तो भी वे नहीं भूले और मैं खाली हाथ जाऊँ? नहीं–नहीं, इससे तो न जाऊँ सो ही अच्छा!''

''तो जाओ ही मत। चलो छुट्टी हुई, इतने लोगों में किसे पता लगेगा कि आईं या नहीं।'' राधा ने सारी समस्या का सीधा–सा हल बताते हुए कहा।

''बड़ा बुरा मानेंगे। सारे शहर के लोग जावेंगे और मैं समधिन होकर नहीं जाऊँगी, तो यही समझेंगे कि देवरजी मरे तो संबंध भी तोड़ लिया। नहीं–नहीं, तू यह अँगूठी बेच ही दे।'' और उन्होंने आँचल की गाँठ खोलकर एक पुराने ज़माने की अँगूठी राधा के हाथ पर रख दी। फिर बड़े मिन्नत भरे स्वर में बोलीं, ''तू तो बाज़ार जाती है राधा, इसे बेच देना और जो कुछ ठीक समझे खरीद लेना। बस, शोभा रह जावे इतना ख़याल रखना।''

गली में बुआ ने चूड़ी वाले की आवाज़ सुनी तो एकाएक ही उनकी नज़र अपने हाथ की भद्दी मटमैली चूड़ियों पर जाकर टिक गई। कल समधियों के यहाँ जाना है, ज़ेवर नहीं है तो कम–से–कम काँच की चूड़ी तो अच्छी पहन लें, पर एक अव्यक्त लाज ने उनके कदमों को रोक दिया, कोई देख लेगा तो! लेकिन दूसरे ही क्षण अपनी इस कमज़ोरी पर विजय पाती–सी वे पीछे के दरवाज़े पर पहुँच गईं और एक रुपया कलदार खर्च करके लाल–हरी चूड़ियों के बंद पहन लिए। पर सारे दिन हाथों को साड़ी के आँचल से ढँके–ढँके फिरीं।

शाम को राधा भाभी ने बुआ को चाँदी की एक सिंदूरदानी, एक साड़ी और एक ब्लाउज का कपड़ा लाकर दे दिया। सब कुछ देख–पाकर बुआ बड़ी प्रसन्न हुईं और यह सोच–सोचकर कि जब वे ये सब दे देंगी तो उनकी समधिन पुरानी बातों की दुहाई दे–देकर उनकी मिलनसारिता की कितनी प्रशंसा करेंगी, उनका मन पुलकित होने लगा। अँगूठी बेचने का ग़म भी जाता रहा। पासवाले बनिए के यहाँ से एक आने का पीला रंग लाकर रात में उन्होंने साड़ी रँगी। शादी में सफेद साड़ी पहनकर जाना क्या अच्छा लगेगा? रात में सोईं तो मन कल की ओर दौड़ रहा था।

दूसरे दिन नौ बजते–बजते खाने का काम समाप्त कर डाला। अपनी रँगी हुई साड़ी देखी तो कुछ जँची नहीं। फिर ऊपर राधा के पास पहुँची–''क्यों राधा! तू तो रँगी साड़ी पहिनती है तो बड़ी आब रहती है, चमक रहती है, इसमें तो चमक आई नहीं?''

''तुमने कलफ जो नहीं लगाया अम्मा, थोड़ा–सा माँड़ दे देतीं तो अच्छा रहता। अभी दे लो, ठीक हो जाएगी। बुलावा कब का है?''

''अरे नए फैशनवालों की मत पूछो, ऐन मौकों पर बुलावा आता है। पाँच बजे का मुहरत है, दिन में कभी भी आ जावेगा।''

राधा भाभी मन–ही–मन मुस्करा उठीं।

बुआ ने साड़ी में माँड़ लगाकर सुखा दिया। फिर एक नई थाली निकाली, अपनी जवानी के दिनों में बुना हुआ क्रोशिए का एक छोटा सा मेज़पोश निकाला। थाली में साड़ी, सिंदूरदानी, एक नारियल और थोड़े–से बताशे सजाए, फिर जाकर राधा को दिखाया। संन्यासी महाराज सवेरे से इस आयोजन को देख रहे थे। उन्होंने कल से लेकर आज तक कोई पच्चीस बार चेतावनी दे दी थी कि यदि कोई बुलाने न आए तो चली मत जाना, नहीं तो ठीक नहीं होगा। हर बार बुआ ने बड़े ही विश्वास के साथ कहा–''मुझे क्या बावली ही समझ रखा है, जो बिना बुलाए चली जाऊँगी?

अरे, वह पड़ोसवालों की नंदा अपनी आँखों से बुलावे की लिस्ट में नाम देखकर आई है, और बुलावेंगे क्यों नहीं? शहरवालों को बुलावेंगे और समधियों को नहीं बुलावेंगे क्या?''

तीन बजे के क़रीब बुआ को अनमने भाव से छत पर इधर–उधर घूमते देख राधा भाभी ने आवाज़ लगाई–''गईं नहीं बुआ?''

एकाएक चौंकते हुए बुआ ने पूछा– ''कितने बज गए राधा? क्या कहा, तीन? सरदी में तो दिन का पता ही नहीं लगता है। बजे तीन ही हैं और धूप सारी छत पर से ऐसे सिमट गई मानो शाम हो गई हो।'' फिर एकाएक जैसे ख़याल आया कि यह तो भाभी के प्रश्न का उत्तर नहीं हुआ तो ज़रा ठंडे स्वर में बोलीं– ''मुहरत तो पाँच बजे का है, जाऊँगी तो चार बजे तक जाऊँगी, अभी तो तीन ही बजे हैं।'' बड़ी सावधानी से उन्होंने स्वर में लापरवाही का पुट दिया। बुआ छत पर से गली में नज़र फैलाए खड़ी थीं, उनके पीछे ही रस्सी पर धोती फैली

हुई थी, उसमें कलफ लगा था और अबरक छिड़का हुआ था। अबरक के बिखरे हुए कण रह–रहकर धूप में चमक जाते थे, ठीक वैसे ही जैसे किसी को भी गली में घुसता देख बुआ का चेहरा चमक उठता था।

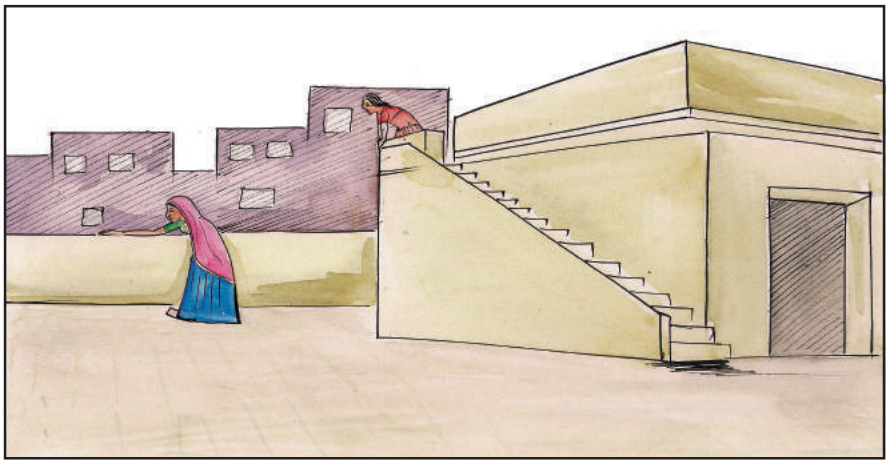

सात बजे के धुँधलके में राधा ने ऊपर से देखा की दीवार से सटी गली की ओर मुँह किए एक छाया–मूर्ति दिखाई दी। उसका मन भर आया। बिना कुछ पूछे इतना ही कहा, ''बुआ! सर्दी में खड़ी–खड़ी यहाँ क्या कर रही हो? आज खाना नहीं बनेगा क्या? सात तो बज गए।''

''जैसे एकाएक नींद में से जागते हुए बुआ ने पूछा– ''क्या कहा! सात बज गए?'' फिर जैसे अपने से ही बोलते हुए पूछा, ''पर सात कैसे बज सकते हैं, मुहरत तो पाँच बजे का था।'' और फिर एकाएक ही सारी स्थिति को समझते हुए, स्वर को भरसक संयत बनाकर बोलीं–''अरे, खाने का क्या है, अभी बना लूँगी। दो जनों का तो खाना है, क्या खाना और क्या पकाना।''

फिर उन्होंने सूखी साड़ी को उतारा। नीचे जाकर अच्छी तरह उसकी तह की, धीरे–धीरे हाथों से चूड़ियाँ खोलीं, थाली में सजाया हुआ सारा सामान उठाया और सारी चीज़ें बड़े जतन से अपने एकमात्र संदूक में रख दीं।

और फिर बड़े ही बुझे दिल से अँगीठी जलाने बैठीं।

शब्दार्थ

परित्यक्ता – त्यागी हुई स्त्री; **तजकर** – छोड़कर, त्यागकर; **अबाध** – बिना किसी रोक–टोक के; **शिथिल** – सुस्त; **गुरूर**– घमंड; **भरमाना** – भ्रम में डालना; **भरसक** – यथा संभव, जहाँ तक हो सके; **पुलकित** – खुश होते हुए; **कलदार** – सरकारी टकसाल में बना हुआ नया रूपया; **अबरक** – एक तरह का चमकदार पदार्थ।

अभ्यास

पाठ से

1. पाँच रुपए और अँगूठी को आँचल में बाँधते समय बुआ के मन में क्या विचार चल रहे थे?
2. सोमा बुआ अपने पति की प्रतीक्षा क्यों नहीं करती थीं?
3. सोमा बुआ किशोरी लाल के घर मुंडन के कार्यक्रम में पहुँची तो उन्होंने वहाँ क्या हालात देखे? अपने शब्दों में लिखिए।
4. बुआ की सोच और नए फैशनवाली सोच में आप किस तरह का अंतर पाते हैं?
5. ''मानो वे दूसरे के घर में नहीं अपने ही घर में काम कर रही हों'' इस पंक्ति के माध्यम से सोमा बुआ के व्यक्तित्व के बारे में कौन–कौन सी बातें सामने आती हैं?
6. कहानी में आए पात्र सोमा बुआ के पति, राधा भाभी और विधवा ननद के व्यक्तित्व पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
7. आपके अनुसार कहानी का शीर्षक 'अकेली' क्यों है?

पाठ से आगे

1. समधी के यहाँ से बुआ को बुलावा क्यों नहीं आया होगा? आपके अनुसार इसके क्या–क्या कारण हो सकते हैं? लिखिए।
2. यदि समधी के यहाँ से बुलावा आ जाता तो कहानी क्या होती?
3. ''नई लाल–हरी चूड़ियाँ पहनने के बाद बुआ सारे दिन हाथ को साड़ी के आँचल से ढँके–ढँके फिरीं।'' बुआ ने ऐसा क्यों किया होगा?
4. शादी–विवाह जैसे सामाजिक समारोहों में अक्सर व्यक्ति अपनी हैसियत से अधिक खर्च करता है और आर्थिक बोझ में दब जाता है। आपके अनुसार यह कहाँ तक उचित है?

भाषा के बारे में

अनुनासिक (ँ) : स्वरों का उच्चारण करते समय वायु को केवल मुख से ही बाहर निकाला जाता है। उच्चारण करते समय जब वायु को मुख के साथ–साथ नाक से भी बाहर निकाला जाए तो वहाँ अनुनासिक स्वर हो जाता है। अनुनासिकता का हिंदी में चिह्न चन्द्रबिन्दु (ँ) है। मानक वर्तनी में इसके लेखन सम्बन्धी नियम इस प्रकार हैं–

(क) जिन स्वरों अथवा उनकी मात्राओं का कोई भी हिस्सा यदि शिरोरेखा से बाहर नहीं निकलता है तो अनुनासिकता के लिए चन्द्रबिन्दु (ँ) लगाया जाना चाहिए; जैसे साँस, चाँद, गाँव, कुआँ, उँगली, पूँछ आदि।

(ख) जिन स्वरों अथवा उनकी मात्राओं का यदि कोई भी हिस्सा शिरोरेखा के ऊपर निकला रहता है तो वहाँ अनुनासिकता को भी बिंदु से ही लिखना चाहिए; जैसे चोंच, कोंपल, मैं, में, केंचुआ, गेंद, सौंफ आदि।

अनुस्वार (ं) : हिंदी में अनुस्वार एक नासिक्य व्यंजन है, जिसे (ं) से लिखा जाता है। इसे प्रायः स्वर या व्यंजन के ऊपर लगाया जाता है। अनुस्वार का अपना कोई विशेष स्वरूप नहीं होता, बल्कि इसका उच्चारण इसके आगे आनेवाले व्यंजन से प्रभावित होता है। जैसे कि–

BRBQ66

कवर्ग के पूर्व (ङ्) – पङ्कज – पंकज, गङ्गा – गंगा

चवर्ग के पूर्व (ञ्) – चञ्चल – चंचल, पञ्छी – पंछी

टवर्ग के पूर्व (ण्) – डण्डा – डंडा, कण्ठी – कंठी

तवर्ग के पूर्व (न्) – पन्त – पंत, अन्धा – अंधा

पवर्ग के पूर्व (म्) – चम्पक – चंपक, खम्भा – खंभा

इसके अतिरिक्त सभी वर्णों के पहले आने पर अनुस्वार का उच्चारण पंचम वर्ण में से **न्** या **म्** किसी एक वर्ण की भाँति हो सकता है। जैसे संवाद में 'म्' की तरह और संसार में 'न्' की तरह। अनुस्वार के विपरीत आप पाएँगे कि अनुनासिक का स्वरूप स्थिर रहता है।

1. इस पाठ में अनुनासिक ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए दो तरह के संकेतों चन्द्र बिंदु (ँ) और बिंदु (ं) का उपयोग हुआ है और अनुस्वार को व्यक्त करने के लिए बिंदु (ं) का उपयोग कई जगह हुआ है। कक्षा में समूह बनाकर नीचे दी गई सारणी में ऐसे शब्दों को खोज कर लिखिए।

अनुनासिक (ँ)	अनुनासिक (ं)	अनुस्वार (ं)
पाँच	पापड़ों	पंकज

2. पाठ में आए अनुनासिक और अनुस्वार के उपयोग वाले शब्दों के अलावा ऐसे शब्दों का चयन कर एक सूची बनाइए, जिसमें अनुनासिक और अनुस्वार का प्रयोग हुआ हो।

अनुनासिक (ँ)	अनुस्वार (ं)

3. घर–बार, मिलना–जुलना, आस–पास, अभी–अभी आदि इस तरह के शब्द अक्सर प्रयोग में आते हैं, इस कहानी में भी आए हैं। कक्षा में समूह बनाकर इसी प्रकार के शब्दों को ढूँढ़कर सूची बनाइए एवं उन्हें निम्नांकित सारणी के अनुसार वर्गीकृत कीजिए।

दोनों समान शब्द	परस्पर विरोधी शब्द	विपरित लिंगी शब्द	पहला सार्थक दूसरा निरर्थक शब्द	दोनों निरर्थक शब्द
धीरे–धीरे	आना–जाना	पति–पत्नी	चाय–वाय	आँय–बाँय

4. ''समधियों का मामला ठहरा, सो भी पैसेवाले''।

(क) यहाँ 'ठहरा' शब्द से क्या आशय है?

(ख) ''ठहरा'' शब्द के अलग–अलग अर्थ बताने वाले वाक्य लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. कहानी के अंत को दर्शाते हुए चित्र बनाइए और उस पर अपने विचार लिखिए।
2. विवाह के अवसर पर गीत गाए जाते हैं। इसी तरह से विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले गीतों का अपना एक संकलन तैयार कीजिए। घर के बड़ों से बातचीत करके अपने पसंद के किसी एक गीत को सीखकर समूह में गाइए।
3. आपने 'अकेली' कहानी पढ़ी। इस कहानी में निहित मूल भावों से मिलती–जुलती और भी कई कहानियाँ हैं, यथा– प्रेमचंद की 'बूढ़ी काकी', भीष्म साहनी की 'चीफ़ की दावत' आदि। शिक्षक की सहायता से इन कहानियों को पढ़कर निम्न आधारों पर चर्चा कीजिए–

   (क) पात्र
   (ख) सामाजिक स्थिति
   (ग) शब्दों का चयन
   (घ) भाषा आदि।

BRKL7T